लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक
website: www.pawanprawah.com

पवन प्रवाह

सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह
डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2015-17
वर्ष 03 अंक 45 लखनऊ। सोमवार 31 से 06 अगस्त-2017
e-mail-pawanprawah@gmail.com
मूल्य : तीन रूपये पृष्ठ-16

प्राणिक ऊर्जा : विशिष्ट उपचार

लेखक डॉ. भरत राज सिंह
स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के महानिदेशक
एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष हैं

(भाग-11)

पिछले 10 अंकों में हमने भौतिक शरीर में ऊर्जा का संचार व उससे उत्पन्न ऊर्जा (आभा), जो भौतिक शरीर के कुछ क्षेत्र तक प्रभावी रहती है तथा प्राण के स्रोत, रंग प्राण व उसमें मुख्यतः प्राणिक ऊर्जा (शक्ति) किसे कहते हैं व क्या लाभ हैं, भौतिक शरीर मे चक्रों का क्या महत्व है व इससे शरीर की ऊर्जा का संतुलन कैसे प्रभावी होता है, उर्जा (आभा) के परत, उनका महत्व और उससे शारीरिक स्वास्थ्य में, क्या लाभ होगा, तथा शारीरिक रोगो के निदान में प्राणिक उपचार (हीलिंग), ऊर्जा कैसे अपने शरीर मे बुलाये, उसकी क्या विधि है, ऊर्जा को बुलाने अथवा संग्रह के उपरान्त का अनुभव और शरीर के मुख्यकेंद्रों में ऊर्जा के सात चक्रों को जाग्रित करने के बारे में तथा मौलिक उपचार के लिए स्तर-1 की जानकारी से पूर्णतः अवगत हुये थे। इस अंक में, विशिष्ट उपचार स्तर-II के विषय मे बताया गया है।

11.0 विशिष्ट उपचार स्तर-II

11.1 परिचय

प्राणिक ऊर्जा उपचार के मौलिक स्तर-प्रथम के विषय मे अभी तक हमने जानकारी प्राप्त की। विशिष्ट उपचार स्तर-II में ग्रेंड मास्टर चाओ काक सुयी द्वारा प्रदर्शित व प्रसारित विधियों से हिलींग पावर और तकनीकों को जानने में काफी मदद मिलेगा। इसमें आप अपने मरीज के आभा और चक्रों में कई सरल ऊर्जावान दोषों को समझने के लिए अपने रोगी में चिकित्सा की मात्रा में अधिक मात्रा में चैनल करना सीखेंगे और आप उन ऊर्जावान दोषों को ठीक करने के लिए कई नए उपचार तकनीक भी सीखेंगे।

जब आप इस स्तर के अध्ययन को शुरू करते हैं तब आप दूसरे स्तर की गहरायी या समस्वरता ग्रहण करने का अनुभव प्राप्त करते हैं जैसा कि पहले यह बिल्कुल जरूरी नहीं था कि आप इस समस्वरता को ग्रहण करें। परंतु आपको इस स्तर की तकनीकों सीखने और अभ्यास करने से इसकी गहरायी (एफ्यूमेणमेंट) अधिक मात्रा में चिकित्सा ऊर्जा को चलाने में सहायता करेगा और प्रभावी रूप से कार्य करने की आपकी क्षमता में वृद्धि करेगा। कई नई चिकित्सा तकनीक जो इस द्वितीय स्तर मे आप सीखेंगे पहले की तुलना में अधिक शक्तिशाली व प्रभावी है। यदि अतः एक बार फिर से सावधानीपूर्वक मौलिक स्तर एक के कदमों को ध्यान में रखना सुनिश्चित करें ताकि आप इसका पूर्ण लाभ प्राप्त कर सकें।

11.2 समग्ररूप मे जागरूकता और स्वास्थ्य कार्यवाही का महत्व: मौलिक उपचार के अध्ययन में, प्राणिक ऊर्जा के साथ-साथ ऊर्जा को चैनल करना और अपने हाथों से मानव ऊर्जा क्षेत्र को समझ लिया। जैसा कि आपने सीखा है, ऊर्जा के क्षेत्रों का अनुभव प्राप्त किया। हमने यह भी अध्ययन किया कि ऊर्जा क्षेत्र आभा और चक्रों से बना है और यह उनके भीतर ऊर्जावान दोष है जो शरीर, मन और आत्मा के बीमारियों और बीमारियों में परिणाम देता है। इस अध्ययन मे ऊर्जा क्षेत्र के बारे में थोड़ा और अधिक, इनमें से कुछ दोष जो उसमें हो सकते हैं को, जानने की कोशिश करेंगे। आभा सात परतों या उच्च निकायों में मौजूद है और आभा की प्रत्येक परत हमारे अलग-अलग पहलू से मेल खाती है- हर आभा परत, जैसे प्रत्येक चक्र, होने और चेतना का दायरा है। प्रथम-परत या ईथरियल बॉडी, एक ऊर्जा निकाय है जो भौतिक शरीर की रूपरेखाओं के निकट रूप से अनुसरण करती है और इसमें ऊर्जावान तत्व होते हैं, जो इसके भीतर जैविक और रासायनिक प्रक्रियाओं का सन्चालन करते हैं। हाथों को पासिंग के अभ्यास से, हम इस ईथर शरीर की ऊर्जा को समझ चुके हैं। प्राणिक ऊर्जा स्तर-द्वितीय में आप आभा की यह पहली परत देखना अनुभव करेंगे। भावनात्मक शरीर या आभा की दूसरी परत और मानसिक शरीर, या आभा की तीसरी परत-एथरिक शरीर के ऊपर की अगली दो परत-क्रमशः भावनात्मक जीवन और मानसिक जीवन से जुड़े हैं। बाकी परतें, सातवें के माध्यम से चौथे, उत्तरोत्तर अधिक आध्यात्मिक कार्यशील होती हैं। आभा के इन सात परतों में अंतर (भौतिक शरीर के भीतर और आस-पास के क्षेत्रफल पर कब्जा), लेकिन प्रत्येक परत (लगभग चार से पांच इंच की वृद्धि पर) पहले परत की तुलना में शरीर की सतह से थोड़ा आगे फैली हुई है। परतें ऊर्जावान 'कंपन' के क्रमिक उच्च स्तर पर मौजूद हैं और यह समझना महत्वपूर्ण है कि इन परतों को उनके क्रमिक उच्च कंपन के स्तर से जाना जाय न कि उनके भौतिक स्थान से। ऊर्जावान दोष आमतौर पर किसी भी या सभी सात परतों में पाए जा सकते हैं, और प्राणिक ऊर्जा स्तर द्वितीय के अभ्यास के दौरान आप आभा में चार साधारण सरल ऊर्जावान दोषों को समझ सकते हैं और उन्हें सुधार सकते हैं। प्राणिक ऊर्जा स्तर-III में आप आभा के सभी सात परतों के सभी ऊर्जावान दोषों को समझ और ठीक करनेकी प्रक्रिया को सीखेंगे।

हमे यह भी जानकारी हो चुकी है कि चक्र प्रणाली में सात प्रमुख चक्र होते हैं, जिनमें से प्रत्येक चक्र हमारे जीवित शरीर के अस्तित्व के एक अलग पहलू से मेल खाती हैं। प्रत्येक चक्र की आभा की इसी परत के साथ एक महत्वपूर्ण संबंध है। उदाहरण के लिए, प्रथम-चक्र, शारीरिक जीवन शक्ति और शारीरिक जीवन से जुड़ा हुआ है और आभा की पहली परत (एथेरिक शरीर) से घनिष्ठ संबंध रखता है, जो भौतिक शरीर के संचालन के लिए ऊर्जावान पैटर्न है। दूसरा-चक्र भावनाओं से जुड़ा होता है, विशेष रूप से इच्छा और कामुकता, और आभा की दूसरी परत (भावनात्मक शरीर) से घनिष्ठ संबंध होता है। तीसरा-चक्र मन से जुड़ा है, विशेष रूप से स्वयं की धारणा और प्रक्षेपण से संबंधित अवधारणाओं, और आभा (मानसिक शरीर) की तीसरी परत के साथ घनिष्ठ संबंध रखता है। सातवें-चक्रों के माध्यम से चौथवां क्रमिक रूप से अधिक जटिल और अधिक कार्यशील कार्यप्रणाली को दर्शाता है, जैसा कि उनकी आभा की इसी परतें भी उतनी ही प्रगति करती हैं जितनी अधिक परिष्कृत और आध्यात्मिक संचालन स्तर पर। सात आभा परतों और सात चक्रों द्वारा भौतिक शरीर के चारों ओर एक ऊर्जा क्षेत्र बनता हैं, जो हमारे सांसारिक जीवन के सभी विभिन्न पहलुओं को जोड़ता है और यह हमारे शारीरिक, भावनात्मक, मानसिक और आध्यात्मिक स्थिति का सूचक भी है। चक्रों के ऊर्जावान दोष सामान्य होते हैं, और प्रथम से सातवें परत तक प्राणिक ऊर्जा स्तर-द्वितीय के अपने अभ्यास के दौरान आप चक्रों में एक बहुत ही महत्वपूर्ण ऊर्जावान रुग्ण स्थिति को समझने और उसके इलाज करने की विधि को सीखेंगे तथा प्राणिक ऊर्जा स्तर-त्रितीय में, आप अवरुद्ध चक्र पर कई अतिरिक्त शक्तिशाली तकनीकों का उपयोग करके चक्रों में उत्पन्न सभी ऊर्जावान दोषों को समझ सकते हैं और उन्हें ठीक करना भी सीख सकते हैं।

आप प्राणिक ऊर्जा स्तर-द्वितीय और त्रितीय में जो कई रोमांचक उपचार तकनीक हैं, को सीखेंगे, लेकिन शुरुआत से ही यह समझना महत्वपूर्ण होगा कि यह अकेले एक ऐसी तकनीक नहीं है, जो कि प्रभावी ऊर्जा चिकित्सा को मुमकिन बनाती है बल्कि आप सभी को पूरी तरह से जागरूकता और क्रियान्वन के अनुभव से बनाती हैं। मानव ऊर्जा क्षेत्र एक समग्र इकाई है जिसमे प्रत्येक भाग हर दूसरे भाग को प्रभावित करता है। आपको ऊर्जा क्षेत्र के विभिन्न भागों-चक्रों और आभा की परतों और उनके भीतर की घटनाओं की अलग-अलग स्थितियों के बारे में कभी नहीं सोचना चाहिए, परंतु एक साथ काम करने वाले अधिक से अधिक भागों को समझना चाहिये। प्रत्येक चक्र और आभा की परते अन्य सभी को प्रभावित करती है जो एक साथ उस व्यक्ति की स्वास्थ्य और अवस्था में शामिल होते हैं। आभा की परतें, उदाहरण के लिए, पूरी तरह से अलग संस्थाएं नहीं हैं न केवल वे अंतरिक्ष में अंतर करते हैं, वे एक दूसरे को अच्छी तरह प्रभावित करते हैं। यहा यह भी उल्लेखनीय है कि आभा की एक परत में ऊर्जावान दोष अक्सर कई अन्य परतों के माध्यम से फिल्टर होते है और प्रभावित करते है। चक्र पूरी तरह से अलग संस्थाएं नहीं हैं, वल्कि चक्र प्रणाली एक पूरी प्रणाली है जो सन्युक्त रूप में काम करती है और एक चक्र में उत्पन्न दोष अक्सर अन्य चक्रों और पूरे सिस्टम को प्रभावित करता है जिसमे आभा की परत भी समलित है।

इससे आप अपनी जागरुकता को सीमित नहीं कर सकते हैं, क्योंकि आप आभा और चक्रों में स्थितियों को समझने के लिए चिकित्सा तकनीकों को नियोजित करते हैं, लेकिन ऊर्जा क्षेत्र के किसी विशेष भाग पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय अपने रोगी को पूरे ऊर्जा क्षेत्र के लिए खुला रखना चाहिए, जिसपर आप काम कर रहे हैं उसमें कोई विशेष ऊर्जावान घटना अथवा विशिष्ट तकनीक का उपयोग कर रहे हैं। उदाहरण के तौर पर, आप उस मरीज़ का इलाज कर सकते हैं, जो अपने या उसकी पहली परत की आभा में ऊर्जावान दोष है, जिसे आप महसूस कर चुके हैं जो एक शारीरिक रोग से संबंधित हैं और मौजूद भी है। ईथरिक परत में ये दोष वास्तव में द्वितीय और त्रितीय-परतों पर दोषों से 'नीचे फ़िल्टर्ड' हो सकते हैं, जो दोष खुद पाचवीं, सातवें या अन्य उच्चतर परतों से संबंधित हो सकते हैं। बेशक, एक या अधिक चक्रों में परिस्थितियां अक्सर अच्छी तरह से शामिल होती हैं और यह एक सम्मिलत पैटर्न हो सकती है।

क्रमशः अगला अंक 12 पढ़े...

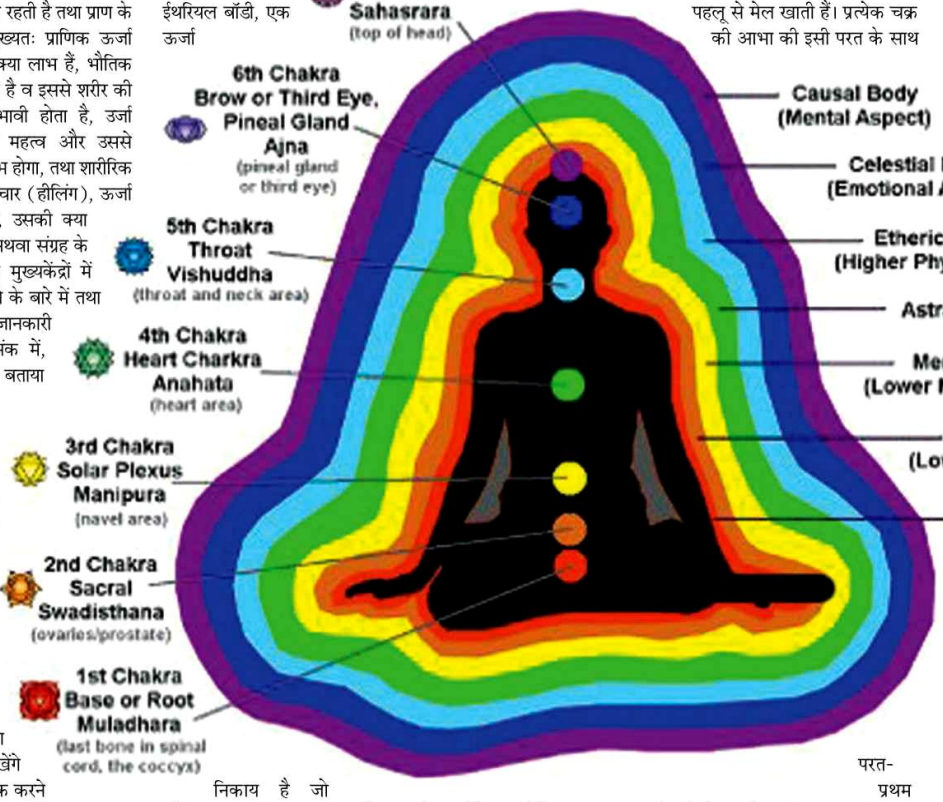

Auric Bodies and Chakras